विश्व न्याय मन्दिर

प्रभुधर्म के पावन लेखों को पढ़ना और बहाउल्लाह के विशाल प्रकटीकरण के महत्व के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना – ये दायित्व बहाउल्लाह के प्रत्येक अनुयायी को सौंपे गए हैं। सभी के लिए आदेशित है कि वे इस महान प्रकटीकरण के समुद्र से अपनी रूचि और सामर्थ्य के अनुसार ज्ञान के मोतियों की खोज करें।

–रिज़वान 2010

मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 52 अंक 5 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
मई 2016 बहाई वर्ष : 173

भारत में प्रभुधर्म के बाहरी मामलों के विभाग द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

• विश्व भर में आज भारत के युवाओं की आबादी सबसे अधिक है। यह एक ऐसी सच्चाई है जो देश के भविष्य के लिये असीम सम्भावनाओं और सम्भावित चुनौतियों के द्वार खोलती है। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में भारत में प्रभुधर्म के बाहरी मामलों से सम्बन्धित कार्यालय और भारतीय लोक प्रशासन के संयुक्त प्रयास से इस विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया।

समाज की दशा और दिशा के निर्धारण में आज नेतृत्व करने वाले युवा और निर्णय लेने वाले लोगों की जरूरत है–इस विषय का विश्लेषण करते हुये सेमिनार में विशेष रूप से समुदाय–निर्माण के कार्यों में युवाओं की भूमिका पर विचार किया गया। युवाओं पर मीडिया का प्रभाव और मौसम के परिवर्तन से सम्बन्धित मुद्दों को सुलझाने में युवाओं के योगदान पर चर्चा लम्बी चली।

भारत सरकार के युवा मामले और खेल मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव किरन सोनी गुप्ता ने अपने उद्घाटन–सम्बोधन में कहा कि युवा ही हैं जो विचारों की एक नई लहर ला सकते हैं। नेहरु युवा केन्द्र संस्थान के महानिदेशक मेजर जनरल दिलावर सिंह ने कहा कि हम जब युवाओं के योगदान पर विचार कर रहे हैं तो हर प्रकार की स्थिति पर भी विचार करना चाहिये। दिल्ली की एक बहाई युवा पूजा तिवारी ने समुदाय–निर्माण के कार्यों में युवाओं की भूमिका पर बल दिया और कहा कि आज के युवा एक बेहतर दुनिया की बातें सोचते हैं और सामाजिक विकास में हाथ बंटाना चाहते हैं। दूरदर्शन समाचार के वरिष्ठ परामर्शी सम्पादक के. जी. सुरेश ने युवाओं पर मीडिया के प्रभाव की चर्चा करते हुए कहा कि एक मीडियाकर्मी होने के नाते वह महसूस करते हैं कि इन मुद्दों पर गहराई से विचार क्यों नहीं



इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान किरण सोनी गुप्ता अपने उद्गार व्यक्त करती हुईं

किया जाता। आज ज़रूरत है कि मीडिया से सम्बन्धित मुद्दों पर पूरी तरह से विचार किया जाये।

मौसम–परिवर्तन के क्षेत्र में अनुसंधान और विश्लेषण की असीम संभावनाओं पर अपने–अपने विचार व्यक्त करते हुये तीन युवा प्रतिभागियों ने कहा कि मौसम के मिजाज में हो रहे बदलाव से उत्पन्न

शेष पृष्ठ 4 पर

इस अंक में

लखनऊ में राष्ट्रीय संस्थागत बैठक का आयोजन

लखनऊ के कानपुर रोड़ स्थित सिटी मांटेसरी स्कूल के विशाल प्रांगण में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संस्थागत बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक का आयोजन राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की ओर से किया गया था, जिसमें हम समाज के नवनिर्माण का एक महत्वपूर्ण आधार मानते हैं। बहाई इतिहास के प्रारम्भिक दौर में बहाउल्लाह और उनके स्वर्गारोहण के बाद अब्दुल–बहा द्वारा अर्थपूर्ण वार्तालाप का सिलसिला जारी रखा गया। उत्तरी अमेरिका से अपने



राष्ट्रीय संस्थागत बैठक में प्रार्थना करते हुए मित्रगण

अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सदस्य प्रवीण मल्लिक, विभिन्न देशों से आये अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार, भारत में निवास कर रहे सलाहकारगण और भारत तथा नेपाल की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों के अलावा बड़ी संख्या में सहायक मण्डल सदस्य, विभिन्न समुदासमूहों के विकास सहयोगी तथा संयोजक उपस्थित थे। ये प्रतिनिधि दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तरांचल, झारखंड, गुजरात, ओडिशा, पंजाब, हरियाण और महाराष्ट्र से लगभग 450 की संख्या में आये थे। अंतर्राष्ट्रीय सलाहकारों की उपस्थिति ने बैठक को गरिमापूर्ण बना दिया।

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सदस्य श्री प्रवीण मल्लिक ने अपने उद्घाटन–भाषण में अर्थपूर्ण वार्तालाप को बाब और मुल्ला हुसैन की उस बातचीत से जोड़ा जिस बातचीत के दौरान बाब ने अपने ईश्वरीय अवतार होने की बात कही थी। श्री मल्लिक ने कहा कि वह प्रक्रिया वहीं समाप्त नहीं हुई, न ही बाब की शहादत के बाद वह अर्थपूर्ण वार्तालाप ख़त्म हुई, अपितु वह प्रक्रिया आज भी जारी है, जिसे

अर्थपूर्ण वार्तालाप के बाद अब्दुलबहा जब हाइफा लौटे तब विश्व युद्ध छिड़ चुका था और उन्हें उस दौरान हाइफा में रहने के लिये बाध्य होना पड़ा था, लेकिन इस दौरान 26 मार्च, 1916 और 8 सितम्बर 1917 के बीच अब्दुलबहा ने दिव्य योजना की 14 पातियाँ प्रकट कीं



श्री प्रवीण मल्लिक बैठक को संबोधित करते हुए

जो बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था को स्थापित करने के घोषणा–पत्र हैं। दिव्य योजना की पहली पाती 26 मार्च 1916 को प्रकट की गई थी। स्मरणीय है कि 26 मार्च 1916 को दिव्य योजना की पहली पाती के प्रकटीकरण का स्मरणोत्सव मनाते हुये विश्व न्याय मंदिर के

शेष पृष्ठ 2 पर

सदस्य, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सदस्यों के साथ, बहजी स्थित अब्दुलबहा के कमरे में उपस्थित हुये और उन्होंने प्रार्थनायें अर्पित कीं। ये प्रार्थनायें अतीत की शानदार उपलब्धियों और भविष्य की योजनाओं की सफलता के लिये अर्पित की गईं।

अंतराष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सदस्य प्रवीण मल्लिक ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि नई पाँच वर्षीय योजना इस वर्ष 20 अप्रैल को शुरू हो रही है, यह एक प्रक्रिया है जो चलती रहेगी। इस प्रक्रिया के दौरान हमने संस्थान प्रक्रिया को अपनाया, जो न केवल बहाउल्लाह के संदेश का शिक्षण करती है, अपितु विकास के विभिन्न कार्यक्रमों के सहारे हमें सघन गतिविधियों के बीच ला खड़ा करती है। नई पाँच वर्षीय योजना अब्दुलबहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी पर सम्पन्न होगी। इस बीच बहाउल्लाह और बाब के जन्म की शताब्दी 2017 और 2019 में पड़ेगी और इन्हें कुछ इस अंदाज़ में मनाने का आग्रह करते हुये प्रवीण मल्लिक ने अपना उद्घाटन भाषण समाप्त किया कि दुनिया के कोने–कोने में बहाउल्लाह की शिक्षाओं की गूँज प्रतिध्वनित हो जाये।

तीन दिनों की संस्थागत बैठक के दौरान बड़ी संख्या में लोगों को प्रभुधर्म का संदेश देने तथा उन्हें प्रभुधर्म में शामिल करने, अर्थपूर्ण वार्तालाप को आगे बढ़ाने, समान उद्देश्य के साथ सेवा के पथ पर साथ–साथ चलने में क्षेत्रीय शिक्षण समिति की भूमिका, गाँवों और पड़ोस के क्षेत्रों में समुदाय–निर्माण, सह–शिक्षकों की संख्या बढ़ाने, किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रमों को सबलित करने, बहाई बाल कक्षाओं को प्रणालीबद्ध करने, संस्थागत क्षमताओं को बढ़ाने और क्लस्टर स्तर, क्लस्टर के समूहों के स्तर पर व्यवस्था सम्बन्धी काम–काज को मजबूत करने, कोष से सम्बन्धित संस्थागत क्षमता का विकास करने तथा समुदाय के आध्यात्मिक स्वास्थ्य को उन्नत करने और प्रभुधर्म की सुरक्षा तथा संरक्षण जैसे विषयों पर सलाहकारों द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किये गये और प्रत्येक वक्तव्य के बाद छोटे–छोटे समूह में कार्यशालायें आयोजित की गईं।

बैठक के पहले ही दिन राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की सचिव नाज़नीन रौहानी ने भारतीय बहाई समुदाय की प्रमुख उपलब्धियों की चर्चा की और इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि भारत ने लगभग सभी लक्ष्य प्राप्त कर लिये हैं; खासकर, युवाओं के बीच अद्भुत उत्साह का संचार पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है। इस उत्साह का प्रमुख कारण रहा है पिछले कुछ महीनों के दौरान समुदायसमूह अथवा कुछ समुदायसमूहों के ग्रुप द्वारा छोटे–छोटे युवा सम्मेलनों का आयोजन, जिनमें प्राप्त सूचना के अनुसार 24000 युवाओं ने प्रतिभागिता दर्ज़ की।

पहली अप्रैल को संस्थागत बैठक का आगाज प्रार्थनाओं से हुआ, इसके बाद राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के अध्यक्ष डा. मंगेश तेली ने सभी उपस्थित लोगों का स्वागत करने के बाद 26 मार्च 2016 के विश्व न्याय मंदिर के संदेश का अक्षरशः पाठ किया।

इस राष्ट्रीय संस्थागत बैठक की खूबसूरती थी अनुभवों का पिटारा। प्रत्येक समुदायसमूह में पिछले कुछ वर्षों में सेवा को समर्पित मित्रों ने इतने अच्छे अनुभव प्राप्त किये हैं कि उन्हें सुनकर लगता रहा जैसे हम बहाउल्लाह द्वारा प्रकल्पित उस सुनहरे भविष्य में प्रवेश कर गये हैं, जिस भविष्य को पाने का लक्ष्य हम सब का है, एक–एक समर्पित बहाई, एक–एक समुदाय, एक–एक संस्था। बैठक हमें आश्वस्त कर गई कि पाँच वर्षीय योजना के माध्यम से हम भविष्य की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं।



समूहों में अध्ययन करते हुए प्रतिभागीगण

समाचारचित्र



पश्चिम बंगाल की परिषद द्वारा मैटली क्लस्टर में विश्व न्याय मन्दिर के 29 दिसम्बर, 2015 के संदेश का अध्ययन करने हेतु एक 1 से 3 अप्रैल तक एक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें पाँच उपक्षेत्रों से लगभग 40 मित्रों ने भाग लिया। मित्रों ने बरगद के पेड़ के नीचे अध्ययन करना निश्चित किया। इन तीन दिनों के दौरान मित्रों ने सभी अनुच्छेदों का अध्ययन पूर्ण किया।



भोपाल के बहाई भवन में 26 अप्रैल, 2016 को पडरिया, भोपाल मध्यप्रदेश की सहायक मण्डल सदस्या सुश्री सुमन मोरे के साथ पंचगणी महाराष्ट्र के श्री सागर प्रताप रांजने का विवाह स्थानीय आध्यात्मिक सभा भोपाल के तत्वावधान में बहाई विधिविधान से सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में उनके परिजन व बहाई मित्रगण शामिल हुए।



श्री निंग्थौजम नुंगशी सिंह और श्रीमती निंग्थौजम यैमाबी देवी की सुपुत्री सुश्री निंग्थौजम इनाओ देवी का विवाह श्री एलंग्बम बिरेन सिंह और श्रीमती एलंग्बम बिमोला देवी के सुपुत्र श्री एलंग्बम कांता सिंह के साथ 19 फरवरी, 2016 को हिन्दू और बहाई विधिविधान के साथ सम्पन्न हुआ।

विश्व न्याय मन्दिर

रिज़्वान 2016

विश्व के बहाईयों को,

परमप्रिय मित्रों,

'त्यौहारों के सम्राट' के आगमन के साथ अगली वैश्विक 'योजना' के लिये तैयारी का समय समाप्त हुआ; अब हम एक नवीन पाँच वर्षीय साहस, संकल्प तथा संसाधनों की वचनबद्धता के लिये, ईश्वर के प्रिय मित्रों का आह्वान करते हैं।

बहाउल्लाह के निष्ठावानों का जनसमूह तैयार खड़ा है। गत माहों में, विश्व भर में आयोजित संस्थागत सम्मेलनों ने इस महान उद्यम को प्रारम्भ करने की उत्सुकता के संदेश क्रमशः भेजे हैं। सलाहकारों के सम्मेलन को संबोधित संदेश की अत्यावश्यकताओं को पहले ही, निर्णायक कार्य की योजनाओं में परिवर्तित किया जा रहा है। दशकों के वीरतापूर्ण प्रयत्न ने समुदाय को गढ़ा है और विकास को पोषित करने के लिये एक प्रमाणित मात्रा में योग्यता, जिसे इस घड़ी के लिये मजबूत किया गया है, अर्जित की है। विशेष कर गत दो दशकों में, कार्यकुशलता की इस इच्छित वृद्धि में, उल्लेखनीय तेजी आई है।

इस दौरान कार्य के लिये एक विकसित होते हुए ढाँचे को अपनाने ने, मित्रों को आवश्यक क्षमताओं को उत्तरोत्तर पोषित करने और परिष्कृत करने योग्य बनाया, जिसने प्रारंभ में सेवा के सरल कार्यों को आगे बढ़ाया, जिसने कार्य के अधिक व्यापक प्रतिमानों को मार्गदर्शित किया, जिसने प्रत्युत्तर में और अधिक जटिल क्षमताओं के विकास की मांग की। इस प्रकार हजारों समुदायसमूहों में प्रणालीबद्ध मानव–संसाधन के विकास और समुदाय निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है–और इनमें से अनेकों में वह बहुत अधिक विकसित हो गई है। ध्यान केवल व्यक्तिगत अनुयायी या समुदाय या धर्म की संस्थाओं पर केन्द्रित नहीं रहा; 'नई विश्व व्यवस्था' को आगे बढ़ाने के ये तीनों अभिन्न प्रतिभागी, 'दिव्य योजना' के प्रकट होने से निर्मुक्त की गई आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा, प्रेरित हो रहे हैं। उनकी प्रगति के चिह्न अधिकाधिक, प्रत्यक्ष होते जा रहे हैं : असंख्य अनुयायियों के बहाउल्लाह के जीवन के विवरण को बांटने और 'उसके प्रकटीकरण' तथा अतुलनीय 'संविदा' के निहितार्थों की चर्चा करने के लिये प्राप्त आत्म–विश्वास में; जिसके परिणामस्वरूप आत्माओं के बढ़ते हुए दल में, जो 'उसके धर्म' की ओर आकर्षित हुए हैं और 'उसकी' एकीकृत करने की परिकल्पना की प्राप्ति में अपना योगदान दे रहे हैं; समुदाय के तृणमूल स्तर पर, बहाईयों व उनके मित्रों द्वारा उस प्रक्रिया के, जो आचरण के रूपान्तरण और सामाजिक अस्तित्व गढ़ने की क्षमता रखती है, अपने अनुभव का आकर्षक शब्दावली में वर्णन करने की योग्यता में; किसी देश के उन मूल निवासियों की उल्लेखनीय बड़ी संख्या में, जो बहाई संस्थाओं व एजेंसियों के सदस्यों के रूप में, अब उनके समुदायों के कार्यों का मार्गदर्शन कर रहे हैं; धर्म की प्रगति की निरन्तरता के लिये इतने अधिक महत्वपूर्ण कोष में भरोसेमंद, उदार व त्यागपूर्ण दान में; सामुदायिक–निर्माण की गतिविधियों की सहायता के लिये व्यक्तिगत पहल व सामूहिक कार्य की अभूतपूर्व प्रफुल्लता में; युवावस्था में इतनी अधिक निःस्वार्थ आत्माओं के उत्साह में, जो इस कार्य में अत्यधिक जोश ला रहे हैं, विशेषकर युवतर पीढ़ी की आध्यात्मिक शिक्षा में सेवा देकर; उपासना के लिए नियमित बैठकों द्वारा समुदाय के भक्तिपरक चरित्र की वृद्धि में; बहाई प्रशासन की, प्रत्येक स्तर पर क्षमता की वृद्धि में; संस्थाओं, एजेंसियों और व्यक्तियों के द्वारा प्रक्रिया के रूप में विचार करने की तत्परता, जिन जगहों पर वे रहते हैं उनकी तत्कालीन वास्तविकता को पढ़ने तथा उनके संसाधनों का आंकलन करने और उस आधार पर योजनाओं को बनाने में; अब प्रचलित अध्ययन, परामर्श, कार्य और समीक्षा की गत्यात्मकता में, जिसने सीखने की सहज मुद्रा को उपजाया है; इसके लिये बढ़ती हुई सराहना में कि सामाजिक कार्य के द्वारा 'शिक्षाओं' को प्रभाव प्रदान करने का अभिप्राय क्या होता है; समाज में प्रचलित संवादों में बहाई दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिये अवसरों को ढूंढ़ने और उन्हें हासिल करने की वृद्धि में; एक विश्व–व्यापी समुदाय की जागरूकता में, कि वह अपने सभी प्रयत्नों में, प्रभुधर्म में अन्तर्निहित समाज–निर्माण की शक्ति को प्रकट करते हुए, दिव्य सभ्यता के उद्भव में तीव्रता ला रहा है; वस्तुतः मित्रों की बढ़ती हुई सजगता में, कि आन्तरिक रूपान्तरण को पोषित करने, एकता के घेरे को व्यापक करने, सेवा के क्षेत्र में दूसरों के साथ सहयोग करने, अपनी स्वयं की आध्यात्मिक सामाजिक तथा आर्थिक विकास की जिम्मेदारी लेने में जनसमुदायों की मदद करने के उनके प्रयास–और, ऐसे सभी प्रयासों द्वारा दुनिया की बेहतरी को संपादित करना–धर्म के मूल उद्देश्य को अभिव्यक्त करते हैं।

यद्यपि बहाई समुदाय की प्रगति को समग्रता में अंकित करने का कोई एक पैमाना नहीं है, तथापि पूरे विश्व में ऐसे समुदायसमूह जहाँ विकास का एक कार्यक्रम स्थापित किया जा चुका है, उसकी संख्या से बहुत कुछ निष्कर्ष निकाला जा सकता है, 'आभा सौंदर्य' के प्रति कृतज्ञ होते हुए, हम पुष्टि करते हैं कि वह 5000 को पार कर चुकी है। इसके जैसा, इतना व्यापक आधार, उसे वहन करने के लिए एक पूर्व–आवश्यकता थी, जो कार्य अब बहाई विश्व के सामने है–प्रत्येक समुदायसमूह में जहाँ विकास की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है उसे सशक्त करना तथा सामुदायिक जीवन के समृद्ध प्रतिमान को और आगे बढ़ाना। प्रयास को जारी रखने की आवश्यकता श्रम–साध्य होगी। किन्तु इसके परिणाम में बहुत अधिक महत्वपूर्ण संभावना है–कालखण्ड की रचना की भी। यदि छोटे–छोटे कदम नियमित व तेज गति के हों, तो कुल मिलाकर बड़ी दूरी की यात्रा पूरी करते हैं। प्रारंभिक समय में–जैसे कि, द्विशताब्दी जयन्तियों के पूर्व प्रथम के छः चक्रों के दौरान – समुदायसमूह में जो प्रगति अवश्य की जानी है, उस पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, मित्र बहुत कुछ करेंगे कि पूरे पाँच वर्षों के उनके लक्ष्य, उनकी पहुँच के अंदर आ जायें। प्रत्येक चक्र में आगे बढ़ने के लिये वृहद प्रगति के, क्षणभंगुर अवसर सन्निहित हैं, मूल्यवान संभावनाएँ जो लौटकर नहीं आयेंगी।

आह, व्यापक रूप से, समाज में आत्मा की लगातार गहराती हुई अस्वस्थता के लक्षण बढ़ रहे हैं और बदतर हो रहे हैं। जब विश्व के लोग सच्चे उपचार की कामना में कष्ट उठा रहे हैं और एक से दूसरी झूठी उम्मीद की ओर, अनियमित रूप से मुड़ते हैं, कितना असाधारण है कि आप सामूहिक रूप से एक यंत्र परिष्कृत कर रहे हैं, जो हृदयों को शाश्वत 'ईश्वर के शब्द' से जोड़ता है। कितना असाधारण है यह कि, अटल मान्यताओं व विरोधी हितों के कोलाहल जो चारों ओर अधिक उग्र हो रहे हैं, के मध्य, आपका ध्यान, लोगों को साथ लेकर, ऐसे समुदायों के निर्माण करने पर केन्द्रित है, जो कि एकता के आश्रय हैं। विश्व के पूर्वाग्रहों व विरोधों को, आपको हतोत्साहित करने के बजाय, आपको स्मरण कराने वाला रहने दें कि, आपके आस–पास की आत्माओं को उस आरोग्यकारी मरहम की अत्यावश्यकता है, जो केवल आप ही उन्हें दे सकते हैं।

क्रमिक 'पाँच वर्षीय योजनाओं' की श्रृंखला में यह अंतिम है। इसके समापन पर, 'दिव्य योजना' के उद्भव का एक नया चरण प्रारम्भ होगा, जो बहाउल्लाह के समुदाय को 'बहाई युग' की तीसरी शताब्दी में आगे बढ़ाने के लिये होगा। संभवतः, प्रत्येक देश में ईश्वर के मित्रों को, इन आगे आने वाले कुछ वर्षों के आश्वासन समझ में आ जायें, जो इनसे भी अधिक महान कर्त्तव्य, जो अभी आने बाकी हैं, को पूरा करने के लिये सश्रम तैयारी होगी। वर्तमान 'योजना' का व्यापक क्षेत्र प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे उसका हिस्सा कितना ही साधारण हो, इस कार्य में अपना सहयोग देने योग्य बनाता है। दुलारे सहकर्मियों, विश्व के 'सर्वाधिक प्रिय' के आराधक, हम आपसे अपेक्षा करते हैं कि, आपने जो कुछ भी सीखा है और ईश्वर–प्रदत्त जो भी योग्यता व कौशल आपको हासिल है, उससे 'दिव्य योजना' को अगले आवश्यक चरण में ले जाने के लिये, भरसक प्रयास करें। स्वर्गिक सहयोग के लिये आपकी अपनी स्वयं की उत्कट याचनाओं में, पावन समाधियों पर, उन सबकी ओर से, जो सबको समाविष्ट कर लेने वाले प्रभुधर्म के लिये परिश्रम कर रहे हैं, हम हमारी याचनाएँ भी जोड़ते हैं।

–विश्व न्याय मन्दिर

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
New Delhi P.S.O.
Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2015-16-17

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ की गतिविधियाँ

• रिज़वान पर्व मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के कई क्षेत्र भोपाल, इन्दौर, ग्वालियर, सुसेरा, नीमच, मंदसौर, बदवार, उज्जैन, रायपुर में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कुछ स्थानों में मित्रों ने 19 अप्रैल की रात्रि में जबकि ज्यादातर स्थानों पर 20 अप्रैल को दिन में उत्सव का आनन्द उठाया। बहाई सुनिश्चित हुआ, इसी क्रम में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के सामुदायिक विद्यालयों के शिक्षकों हेतु एक माह का प्रशिक्षण कार्यक्रम 10 अप्रैल, 2016 से बहाई भवन भोपाल में आरम्भ हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भोपाल, सुसैरा, बदवार, कांकेर एवं गुण्डरदेही कलस्टर से 16 प्रतिभागी शामिल



बदवार में आयोजित रिज़वान उत्सव में शामिल मित्रगण

मित्रों ने विश्व न्याय मंदिर के प्रपत्र 25 मार्च–2007 का अध्ययन कर अपनी नई स्थानीय सभा के लिए मतदान भी किया। उत्सव में जहाँ स्वरूचि भोज की व्यवस्था थी वहीं हुए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षक के रूप में श्री शिवकुमार साहू एवं श्री सुनील कुमार का सहयोग प्राप्त हुआ तथा सोल के प्रोग्राम संयोजक श्री संदीप मल्लिक



सामुदायिक विद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी

कई रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

• सोसायटी ऑफ युनिवर्सल लर्नर के परामर्श एवं सहयोग से इस वर्ष सामुदायिक विद्यालयों के शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम एक स्थान पर केन्द्रित न होकर क्षेत्रीय अथवा राज्य स्तरीय करना की कुछ दिनों की उपस्थिति से प्रतिभागी एवं प्रशिक्षकगण लाभान्वित हुए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिनों में क्षेत्र में चल रहे पुराने सामुदायिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपग्रेट ट्रेनिंग भी 5 से 10 मई तक प्रदान की गई।

भारत में प्रभुधर्म के बाहरी मामलों के विभाग द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

पृष्ठ 1 का शेष

हो रही समस्याओं के समाधान पर गम्भीरता से विचार किया जाना चाहिये। लखनऊ स्थित सिटी मांटेसरी स्कूल में युवा सशक्तिकरण और क्षमता–निर्माण प्रभाग की प्रधान फरीदा वाहिदी ने कहा कि इस दिशा में आगे बढ़ने के लिये सबसे पहले तो तकनीकी ज्ञान की सीख की ज़रूरत है उसके बाद क्षमता–निर्माण की, इच्छा–शक्ति और फिर संकल्प–शक्ति की आवश्यकता है।

• दिल्ली स्थित राष्ट्रीय बहाई कार्यालय में ऑफिस ऑफ पब्लिक अफेयर्स ऑफ द बहाईज़ ऑफ इंडिया द्वारा एक अन्तर्धर्म बैठक का आयोजन 9 फरवरी, 2016 को किया गया। इस बैठक का उद्देश्य विभिन्न धर्मों के लोगों को एक मंच प्रदान करना था, जहाँ धर्मों के प्रतिनिधि अर्थपूर्ण सम्वाद कर सकें और सामाजिक मुद्दों पर निरन्तर जिससे लोगों के बीच परस्पर प्रेम और एकता समान मूल्यों पर स्थापित हो।

ऑफिस ऑफ पब्लिक अफेयर्स ऑफ द बहाईज़ ऑफ इंडिया के शत्रुहन जीवनानी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि धर्म के नाम पर झगड़े–फसाद ने धर्म को बदनाम कर दिया है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि धर्म का बहुत बड़ा योगदान शांति और भाईचारे को स्थापित करने में रहा है और प्रगतिशील रूप से धर्म ने लोगों को आचारसंहिता दी और सभ्यता के विकास की प्रक्रिया में विभिन्न धर्मों ने बहुत बड़ी भूमिका निबाही है।

बैठक के आरम्भ में तो संदेहास्पद स्वर का आभास हुआ, लेकिन जैसे–जैसे अर्थपूर्ण संवाद बढ़ता गया यह स्पष्ट होता चला गया कि इस मंच ने वह माहौल



राष्ट्रीय कार्यालय में आयोजित अंतर्धर्म बैठक के प्रतिभागी

ऐसे सम्वादों को जारी रखा जा सके। साथ ही, एक ऐसी प्रक्रिया को भी शुरू किया जाना इस बैठक के उद्देश्य में शामिल था कि किस प्रकार सामाजिक प्रगति के विभिन्न पहलुओं तथा एक बेहतर समाज के निर्माण में धर्म की रचनात्मक भूमिका की खोज़ की जा सके देने का वायदा किया है जो दूर–दूर रह रहे लोगों को परस्पर प्रेम और मित्रता के धागे में पिरो सकता है। सभी धर्मों के लोगों का मानना था कि विचारों की भिन्नता हो सकती है लेकिन गंतव्य तो सबका एक ही है – दुनिया में शांति और सद्भाव की स्थापना।

निवेदन

मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें अपने बहाई समाचारपत्र / बहाई न्यूज में प्रकाशित कर सकें। ***धन्यवाद !***

कुल पृष्ठ संख्या–4
बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2015-16-17
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–20
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.05. 2016
Sender's Address:
6,Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कमार)